B.A. SEM-II

Micro Economics-II

Unit-II, Market Structure and Price Determination

द्वारा → Dr. Manas Mani Tiwari

Unit - II Market Structure and Price Determination

1- "पूर्ण प्रतियोगिता वह बाजार स्थिति है जिसमें बहुत सी फर्में एक समान वस्तुऐं बेचती है और इनमें से किसी भी एक फर्म की यह स्थिति नहीं होती कि वह बाजार कीमत को प्रभावित कर सके।" — प्रो० लेफ्टविच

2- माँग पूर्णतया लोचदार होती है।

3- पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म कीमत ग्रहणकर्ता (Price taker) एवम् मात्रा नियोजक (Quantity adjuster) होती है। इसलिए पूर्ण प्रतियोगिता में AR वक्र बायें से दायें चढ़ती हुई सीधी रेखा होगी।

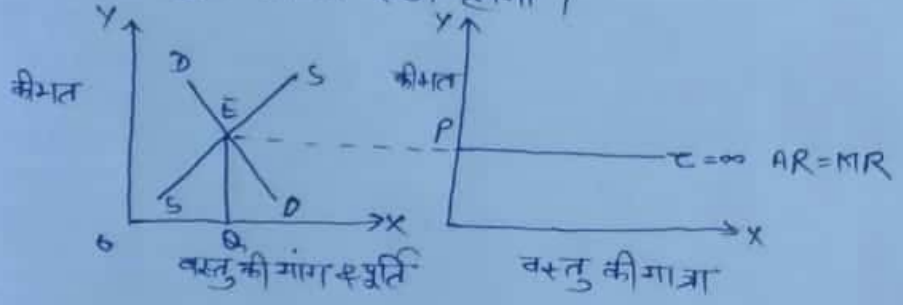

4- पूर्ण प्रतियोगिता एवं अपूर्ण प्रतियोगिता में फर्म सन्तुलन की दो शर्तें है:-

(i) सीमान्त आगम = सीमान्त लागत (MR = MC)

(ii) सीमान्त लागत वक्र सीमान्त आगम वक्र को नीचे से काटे

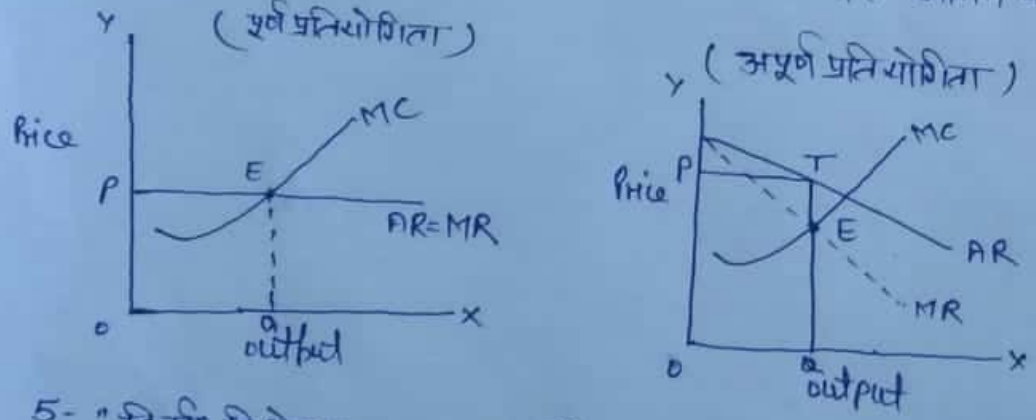

5- "किसी विशेष समय पर पूर्ति वस्तु की वह मात्रा है जो किसी कीमत विशेष पर विक्रय हेतु प्रस्तुत की जाती है।"

6. पूर्ति का नियम - "अन्य बातें समान रहने पर वस्तु की कीमत वृद्धि पूर्ति को बढ़ायेगी तथा वस्तु कीमत में कमी पूर्ति को घटायेगी अर्थात् वस्तु की कीमत तथा पूर्ति में प्रत्यक्ष तथा सीधा सम्बंध पाया जाता है।

संक्षेप में — $S = f(P)$

7. पूर्ति का विस्तार एवं संकुचन कीमत परिवर्तन के कारण एक ही पूर्ति वक्र पर होता है जबकि पूर्ति में वृद्धि एवं कमी कीमत के स्थिर रहते हुए पूर्ति में अधिकता अथवा कमी से होता है।

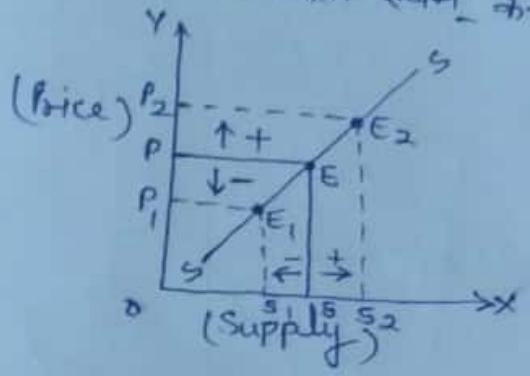

8. पूर्ण प्रतियोगिता में MC वक्र का वह भाग जो AVC से ऊपर होता है, फर्म का अल्पकालीन पूर्ति वक्र कहलाता है।

9. पूर्ण प्रतियोगिता में फर्म अल्पकाल में वस्तु की कीमत AVC से कम होते ही उत्पादन बन्द कर देगी।

10. उद्योग की वह फर्म सीमान्त फर्म होती है जो कीमत गिरने पर सबसे पहले उद्योग को छोड़ती है अर्थात् उद्योग की उच्चतम लागत वाली फर्म ही सीमान्त फर्म होती है, जो सदैव केवल सामान्य लाभ ही अर्जित करती है।

11. रिकार्डो ने अपने श्रम मूल्य सिद्धान्त में बताया कि श्रम लागत ही कीमत निर्धारण में मुख्य भूमिका निभाती है तथा वस्तु कीमत निर्धारण में केवल पूर्ति पक्ष ही सक्रिय रहता है।

12. इसके विपरीत जेवेन्स, वालरस आदि ने सीमान्त उपयोगिता को मुख्य कीमत निर्धारक मानते हुए बताया कि कीमत निर्धारण में माँग पक्ष सक्रिय होता है।

13. मार्शल ने इस विवाद को निपटाते हुए कैंची के फलकों के उदाहरण द्वारा बताया कि – " कीमत उस बिन्दु पर निर्धारित होता है जहाँ वस्तु की माँग वस्तु की पूर्ति के बराबर होता है।"

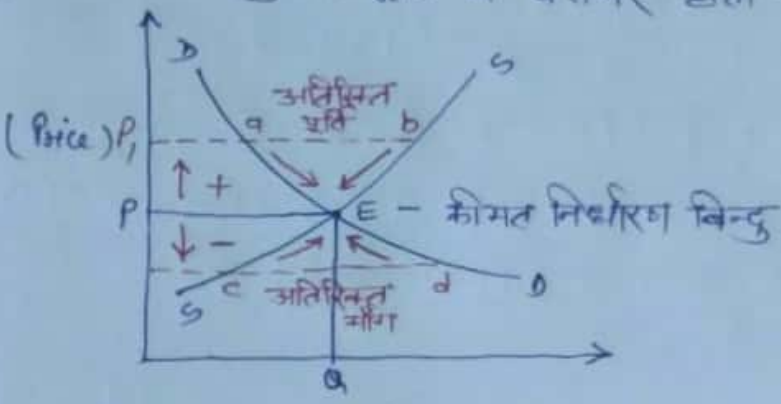

14. मार्शल के अनुसार कीमत निर्धारण में समय तत्व महत्व रखता है। समय का अभिप्राय उस क्रियान्वयन अवधि से है जिसमें पूर्ति की लोच वस्तु की कीमत निर्धारण में प्रमुख भूमिका निभाती है।

15. एक पूर्ण प्रतियोगी फर्म अल्पकाल में लाभ, सामान्यलाभ तथा हानि तीनों ही दशाओं में उत्पादन करती है। चित्रीय निरूपण :-

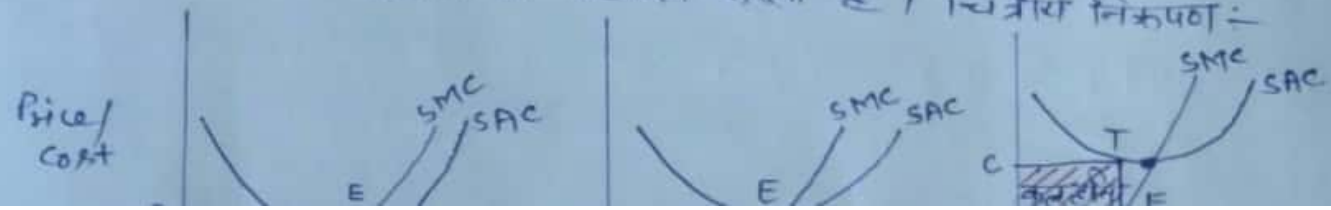

16- अल्पकालीन हानि - उत्पादन बन्द होने का बिन्दु -

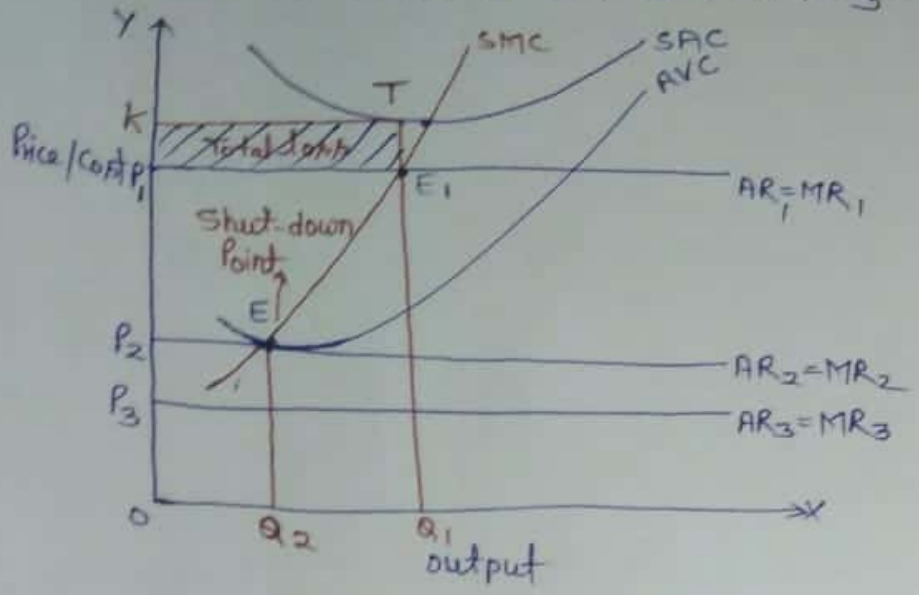

उत्पादन बन्द बिन्दु E पर,

(i) कीमत = AVC

(ii) TR = TVC

(iii) फर्म की कुल हानि = TFC

17- दीर्घकाल में फर्मों के स्वतन्त्र प्रवेश एवम् बहिर्गमन के कारण एक उद्योग को केवल सामान्य लाभ प्राप्त होता है। सन्तुलन के बिन्दु पर - MR = MC तथा AR = AC होता है।

अर्थात् $\boxed{MR = MC = AR = AC}$ - दीर्घकालीन संतुलन

18- "शुद्ध एकाधिकार की स्थिति उस समय होती है, जब एक अकेली फर्म एक वस्तु की एक मात्र उत्पादक होती है जिसका कोई स्थानापन्न नहीं होता है।" प्रो० मैक्कानल

19- एकाधिकारी के लिए MR < AR से। अर्थात् MR < वस्तु की प्रति इकाई कीमत क्योंकि $MR = AR\left[\frac{e-1}{e}\right]$ या $AR = MR\left[\frac{e}{e-1}\right]$.

20- एकाधिकारी वस्तु की आड़ी माँग लोच शून्य या नगण्य होती है।

21. विशुद्ध एकाधिकार में AR वक्र आयताकार अतिपरवलय (Rectangular hyperbola) होता है जिसकी माँग की लोच $e=1$ होती है।

22- एकाधिकारी किसी वस्तु की कीमत और वस्तु की पूर्ति दोनों को एक साथ नियन्त्रित नहीं कर सकता।

23. लोक कल्याण की दृष्टि से सरकार द्वारा रेलवे पर नियन्त्रण सामाजिक एकाधिकार की श्रेणी में आता है।

24- एकाधिकार में सन्तुलन की शर्त- (i) MR = MC

(ii) MC, MR को नीचे से काटे।

25- एकाधिकारी कभी भी अपनी वस्तु के उत्पादन का वह बिन्दु तय नहीं करेगा जहाँ उसके AR वक्र लोच, $e<1$ होगी क्योंकि ऐसी दशा में MR ऋणात्मक होती है।

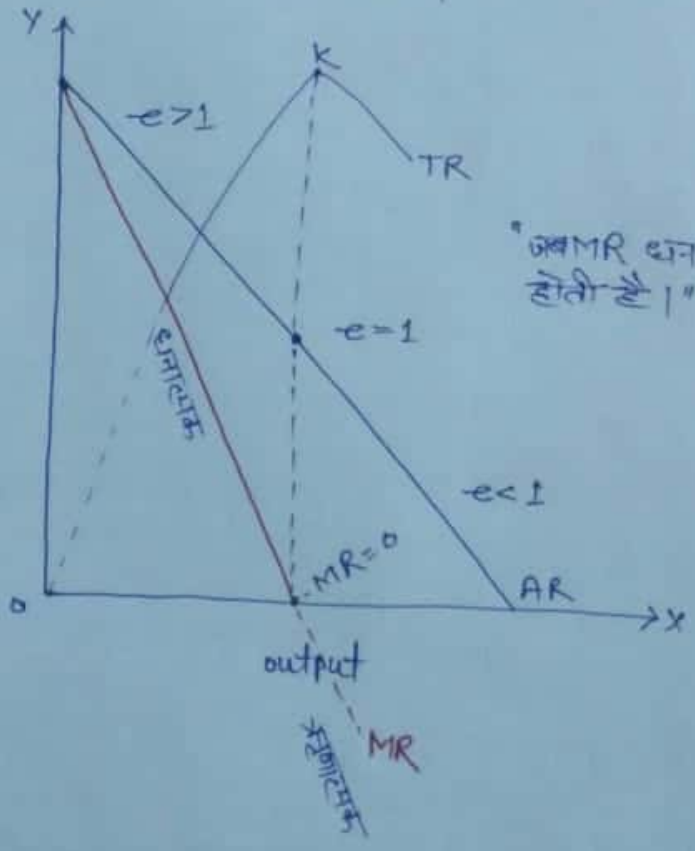

26- अल्पकाल में एकाधिकारी को लाभ, हानि तथा सामान्य लाभ तीनों ही दशा में उत्पादन करना पड़ता है। रेखाचित्रीय निरूपण -

(i) लाभ की दशा (AR > AC or TR > TC) —

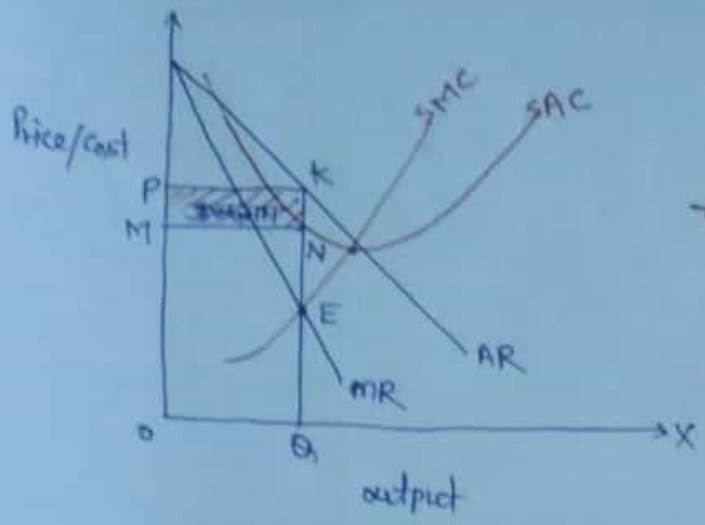

Total Profit = PMNK

(ii) - हानि की दशा (AR < AC or TR < TC) —

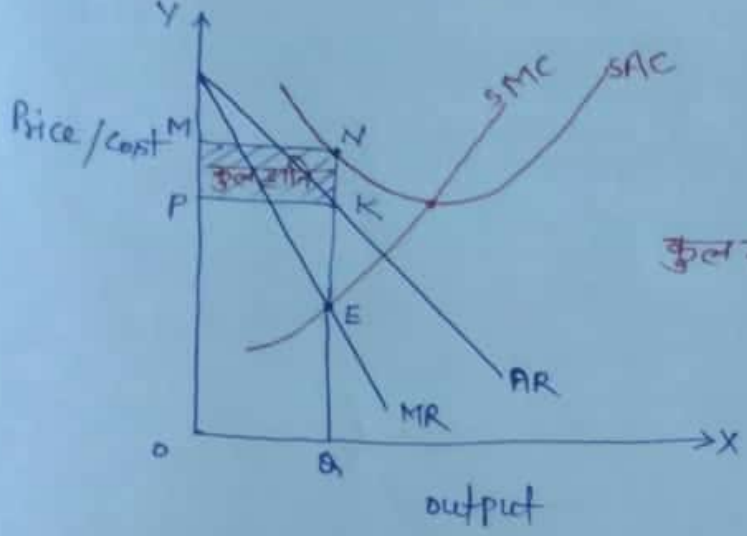

कुल हानि = MPKN

(iii) - सामान्य लाभ (AR = AC or TR = TC)

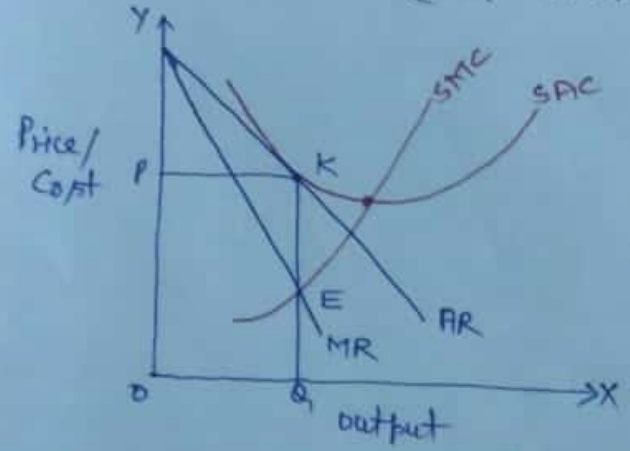

AC = Q_1K

AR = OP

Q_1K = OP - No Profit No loss

27. दीर्घकाल में एकाधिकारी दीर्घकालीन संतुलन तथा अल्पकालीन सन्तुलन दोनो को एक साथ प्राप्त करता है अर्थात् दीर्घकाल में सन्तुलन के बिन्दु पर -

(i) - LMC = MR

(ii) - SMC = MR या LMC = SMC = MR

28- दीर्घकाल में एकाधिकारी निम्न प्लाण्ट के अन्तर्गत उत्पादन करके लाभ प्राप्त करता है -

(i). अनुकूलतम पैमाने से कम आकार का प्लाण्ट

(ii). अनुकूलतम पैमाने के आकार का प्लाण्ट

(iii). अनुकूलतम पैमाने से अधिक आकार का प्लाण्ट ।

(i) -

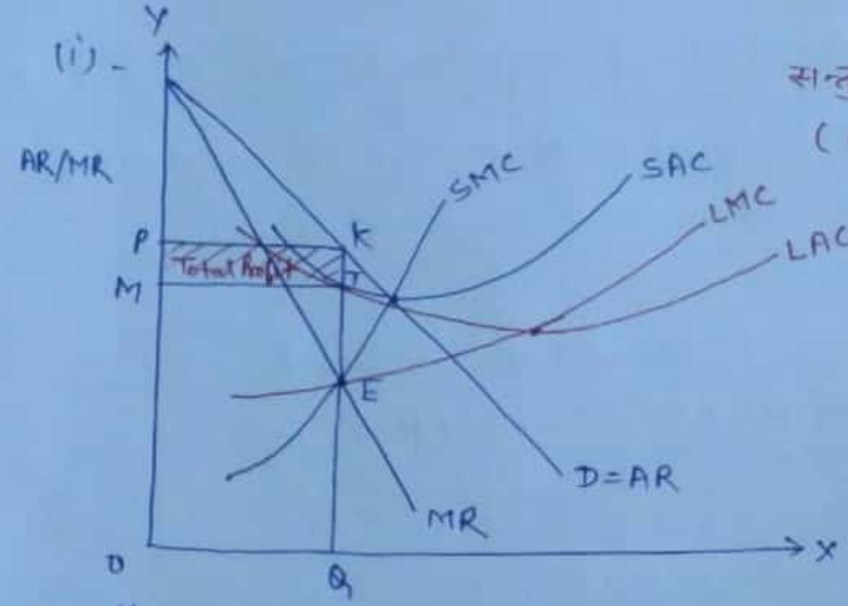

सन्तुलन शर्त =

(LMC = SMC = MR < LAC = SAC < AR

(ii) -

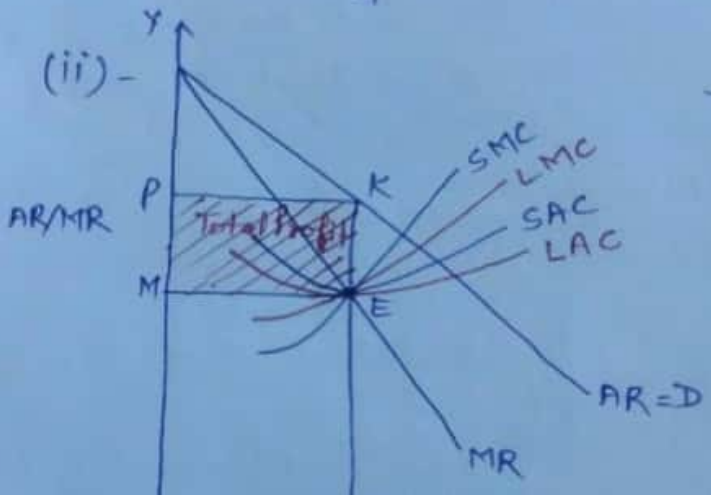

सन्तुलन शर्त =

(LAC = LMC = SAC = SMC = MR < AR

(iii) -

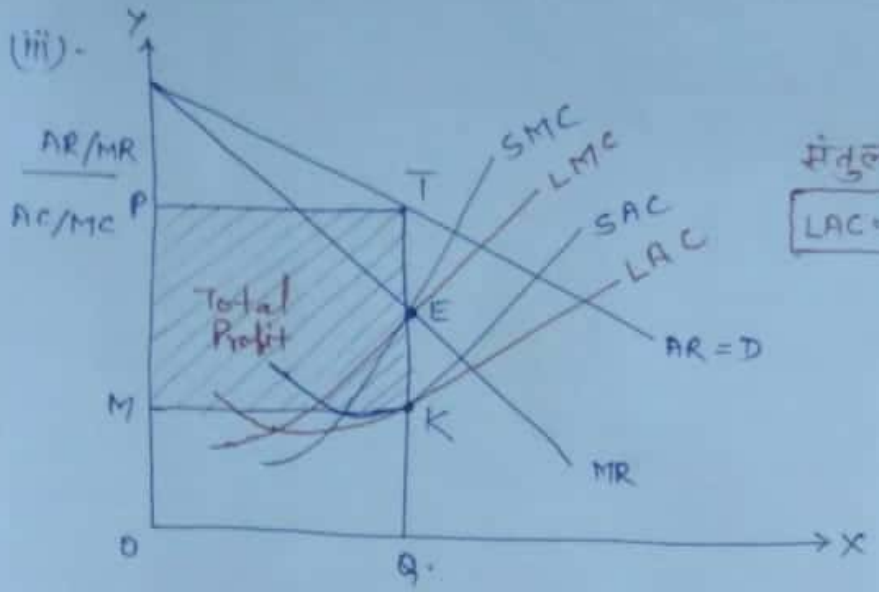

संतुलन शर्ते:

LAC=SAC < SMC=LMC=MR<AR

29. प्रो० लर्नर के अनुसार एकाधिकारी शक्ति की कोटि = $\frac{AR-MC}{AR}$

30- श्रीमती जान राबिन्सन के अनुसार एकाधिकारी शक्ति की कोटि = $\frac{1}{e}$

31- "एक ही नियन्त्रण के अन्तर्गत उत्पादित एक समान वस्तुओं को विभिन्न क्रेताओं को विभिन्न मूल्यों पर बेचने की क्रिया कीमत विभेद कहलाती है।"

32- प्रो० पीगू ने कीमत विभेद की तीन श्रेणियाँ बताई है-

(i) प्रथम श्रेणी कीमत विभेद- उपभोक्ता की सामर्थ्यानुसार मूल्य - वकील, डॉक्टर की सेवा में, कोई उपभोक्ता बचत नहीं।

(ii). द्वितीय श्रेणी का कीमत विभेद- अनेक क्रेता होते है तथा हर से अलग-2 कीमत ली जाती है जैसे- रेलवे सेवा।

(iii) - तृतीय श्रेणी का कीमत विभेद व्यावहारिक है जिसमें निम्न शर्ते पूरी होनी चाहिए -

(a) - दोनों बाजार के क्रेता पृथक-2 होते है उनके मध्य कोई सम्पर्क नहीं होता है।

(b) - पृथक-2 बाजारों में माँग की लोच भिन्न-2 होती है।

33- कीमत विभेद में एकाधिकारी संतुलन की शर्त है -

$$MR_A = MR_B = MC$$

34- राशीपातन कीमत विभेद की एक विशेष दशा होती है जिसमें एकाधिकारी घरेलू बाजार में अकेले होता है तथा विदेशी बाजार में उसे प्रतियोगिता का सामना करना पड़ता है।

35- शुद्ध प्रतियोगिता एवम् शुद्ध एकाधिकार की दोनों अवास्तविक स्थितियों के बीच वास्तविक बाजार की स्थिति को दर्शाती हुई 1933 में दो पुस्तकें प्रकाशित हुई -

(i) The Theory of Monopolistic Competition → E.H. Chamberlin → अमेरिका

(ii) The Economics of Imperfect Competition → Mrs John Robinson → इंग्लैण्ड

36- चैम्बरलिन के अनुसार - "निकट स्थानापन्न वस्तुओं का उत्पादन करने वाली फर्मों के एकत्रीकरण को समूह कहा जाता है।"

37- एकाधिकृत प्रतियोगिता में वस्तु उत्पादन विभेदीकृत होता है।

38- "विक्रय लागतें वह लागतें है, जो माँग वक्र की स्थिति या आकार में परिवर्तन करने के उद्देश्य से खर्च की जाती है" - चैम्बरलिन

विक्रय लागत = विज्ञापन पर व्यय + सेल्स मैनेजर, सेल्स गर्ल्स का वेतन + डीलर को दी जाने वाली रियायत + शोरूम के व्यय + प्रदर्शनी आदि पर व्यय + ग्राहकों के लिए उपहार योजना आदि।

39- "एकाधिकारी प्रतियोगिता में विज्ञापन (विक्रय लागत) फर्मों के जीवन मरण का निर्धारक है।"

40- एकाधिकृत प्रतियोगिता में फर्म को लाभ, हानि तथा सामान्य लाभ हो सकता है :- (अल्पकाल में)

(i). लाभ -

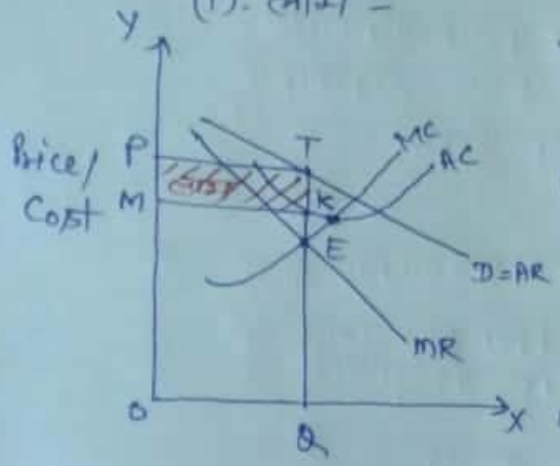

(ii). हानि -

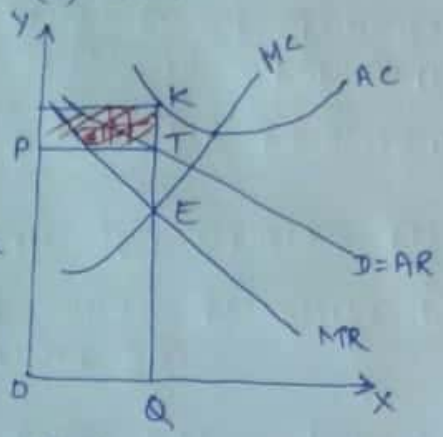

(iii) सामान्य लाभ -

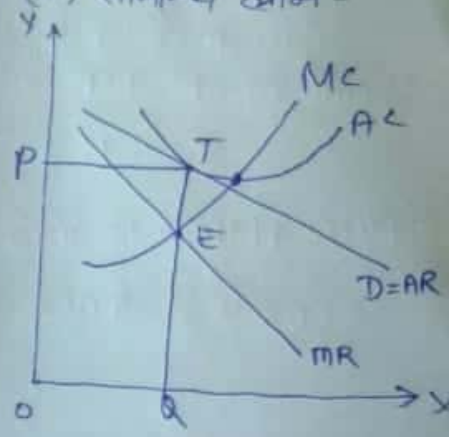

output

41- फर्मों के प्रवेश एवम् बहिर्गमन के कारण दीर्घकाल में एकपूर्ण प्रतियोगी फर्म से सम्बन्धित समूह (Group) को केवल सामान्य लाभ प्राप्त होता है।

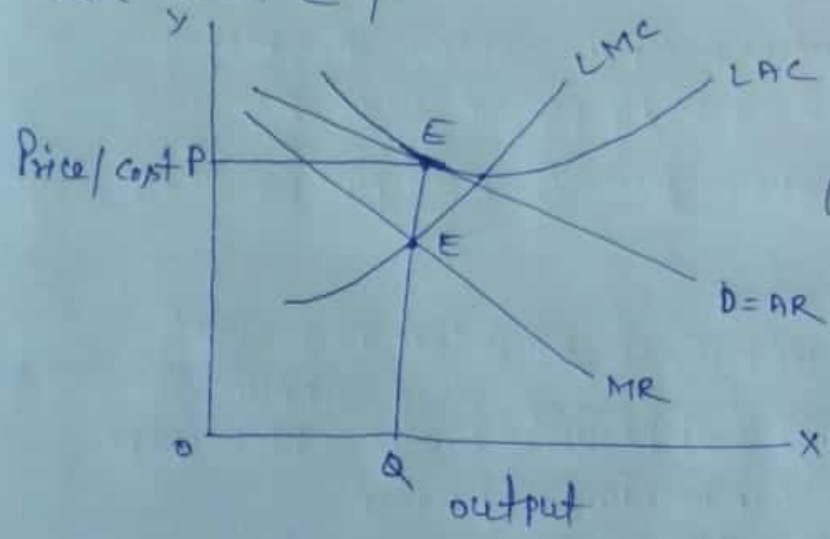

(समूह संतुलन)

42- समूह सन्तुलन के लिए प्रो० चैम्बरलिन ने दो शौर्यपूर्ण धारणाएं मानी है :-

(i) समता धारणा (Uniformity Assumptions) - समूह की प्रत्येक फर्म एक समान लागत दशाओं में कार्यकरती है।

(ii) संगति धारणा (Symmetry Assumptions) - समूह की कोई भी फर्म कीमत और उत्पादन मात्रा में परिवर्तन के लिए प्रेरित नहीं होती।

43- अतिरिक्त क्षमता (Excess Capacity) का विचार मार्शल, पीगू, विकसेल, स्राफा आदि अर्थशास्त्रियों ने भी दिया है परन्तु इसकी व्यवस्थित व्याख्या चैम्बरलिन के स्पर्धी हल में ही मिलती है।

44- वास्तविक उत्पादन तथा आदर्श उत्पादन का अन्तर ही अतिरिक्त क्षमता है।

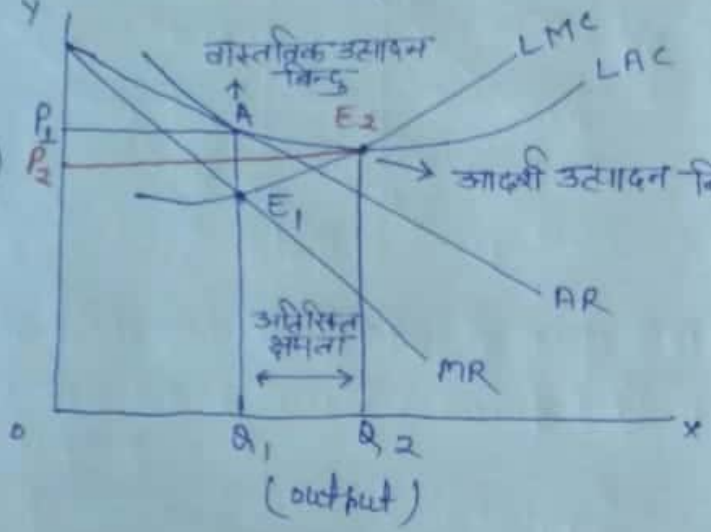

45- गिरते माँग वक्र की दशा मे LAC वक्र सदैव अपनी गिरती अवस्था में तथा न्यूनतम बिन्दु पर पहुँचने से पहले ही AR वक्र को स्पर्श कर लेता है।

46- अल्पाधिकार अपूर्ण प्रतियोगिता का एक रूप है।

47. जब उद्योग में कुछ फर्में एक समान वस्तुएें (जो पूर्ण स्थानापन्न न होकर निकट स्थानापन्न होती है) उत्पादित करती हैं तब अपूर्ण प्रतियोगिता की इस स्थिति को अल्पाधिकार कहा जाता है।

48- द्वियाधिकार अल्पाधिकारी बाजार की वह विशेष परिस्थिति है जिसमें केवल दो विक्रेता होते है।

49- अल्पाधिकार की कीमत दृढ़ता के सम्बन्ध में दो परिकल्पनायें –
(i) अमेरिकी अर्थशास्त्री पाल एम० स्वीजी
(ii) इंग्लैण्ड के आर० एल० हाल तथा सी० जे० हिच ने प्रस्तुत की

50- विकुंचित माँग वक्र परिकल्पना के अनुसार - "अल्पाधिकारी प्रतियोगी फर्मों में कीमत वृद्धि की कोई प्रतिक्रिया नहीं होती जबकि प्रत्येक कीमत कमी की क्रिया के फलस्वरूप प्रतिक्रिया अवश्य उपस्थित होती है।

51- कुर्नो मॉडल (1838) की मुख्य अवधारणा यह है कि प्रत्येक विक्रेता अपने प्रतिद्वन्दी विक्रेता की पूर्ति को स्थिर मान लेता है।

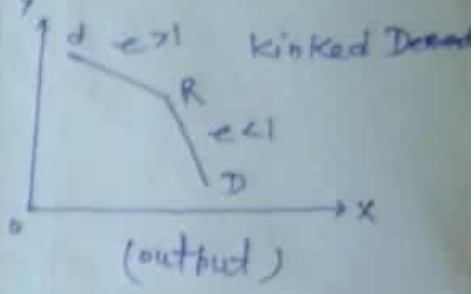

52- एजवर्थ मॉडल की मुख्य अवधारणा यह है कि प्रत्येक विक्रेता अपने प्रतिद्वन्दी विक्रेता की कीमत को स्थिर मान लेता है।

53- बामोल के विचार में फर्म बिक्री को बढ़ाकर अपने कुल आगम को अधिकतम करने का प्रयास करती है।

— ※ —